Course	:	B.Ed., Part-II
Paper	:	XIV (शांति एवं मूल्य शिक्षा) Peace and Value Education
Prepared by	:	Dr. Pallavi
Topic	:	मूल्य–प्रणाली में संस्कृति एवं सभ्यता की भूमिका (Role of Culture and Civilization in Value System)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

मूल्य मनुष्य के प्रत्येक क्षेत्र में यथा चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में निर्णायक की भूमिका निभाता है। यहाँ तक की दो वस्तुओं के बीच ज्यादातर चुनाव अपने–अपने मूल्यों के आधार पर किया जात है। इन मूल्यों का निर्धारण हम सब अपने–अपने सभ्यता तथा संस्कृति के अनुसार करते हैं। यही हमारी मूल्य–तंत्र (Value System) की आधारशीला होती है। अतः, इस पाठ के माध्यम से हम मूल्य–तंत्र को जाने एवं समझेंगे। इसे जानने के लिए मूल्य की अवधारणा, इसके अर्थ एवं प्रकृति को भी जानना आवश्यक है। अतः, इन सभी बातों की कुछ जानकारी इस पाठ में भी दी जाएगी।

2.मूल्य की अवधारणा एवं प्रकृति (Concept of and Nature of Value)

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में हर पल, हर दिन कार्यों के कार्यांवयन हेतु कुछ निर्णय करना होता है। यह निर्णय उसे करीब–करीब हर दिन, हर समय करना पड़ता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मनुष्य के मन में प्रायः ऐसे प्रश्न उठते हैं कि क्या अच्छा है, किसे कार्य को करना उचित होगा? जीवन जीने का सही, उचित एवं अच्छा तरीका क्या होगा? मूल्य शास्त्र के अंतर्गत इन्हीं विषयों पर विचार किया जाता है–जो हमें हर कदम पर अच्छे–बुरे, शुभ–अशुभ, सही–गलत के बीच अंतर करना सीखाता है। मूल्य व्यक्ति के हर कार्यों, व्यवहारों, विचारों को मापदण्ड प्रदान करता है। यह मानव–अस्तित्व के लिए अति महत्वपूर्ण है। वास्तव में मूल्य शास्त्र, दर्शनशास्त्र का अंग है। दर्शन के इस क्षेत्र में, मानव जाति अपनी व्यावहारिक उपादेयता की जानकारी प्राप्त करती है और यही मूल्य–शास्त्र का विषय–क्षेत्र है।

2.1 मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Value)

मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण चीज का प्रतिनिधित्व करता है। यदि एक व्यक्ति स्वयं से यह सवाल करता है कि वह जीवित क्यों है तथा उसके जीवन का लक्ष्य क्या है? तो उत्तर में हम अपने जीवन के कुछ लक्ष्य या उद्देश्य बताएँगे, जो हमें जीने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरणार्थ, कोई व्यक्ति समाज में सुधार लाना चाहता है, तो कोई कला की

साधना करना चाहता है, कोई समाज में उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता है, तो कोई सत्य के मार्ग पर चल कर ईश्वर की अराधना करना चाहता है, कोई योग का मार्ग अपनाकर मोक्ष प्राप्त करना चाहता है। इस तरह, व्यक्ति ऐसे मूल्यों की अवधारणा तक पहुँच जाता है जिनको अपने–आप में मूल्य मानना चाहिए, वे परम मूल्य हैं। दर्शन में इन्हीं स्वतः मूल्यों (Intrinsic Value) को मौलिक माना जाता है, क्योंकि ये मनुष्य के उद्देश्य है जिसे परतः मूल्य (Instrumental Values) के द्वारा प्राप्त करते हैं। परतः मूल्य (Instrumental Values) को आदर्शों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। अतः, कह सकते हैं कि "मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है, जो समालोचना या वरीयता को प्रकट करता है। यह एक आदर्श या इच्छा है, जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रयास करता रहता है।"

"मूल्य" शब्द अंग्रेजी वैल्यू (Value) का समानार्थी है, जो लैटिन भाषा के वैलियर (Valere) से बना है, जिसका अर्थ है 'योग्यता' या महत्व। मूल्य के लिए संस्कृत में 'इष्ट' शब्द है, जिसका अर्थ है– वह जो इच्छित है अर्थात् वह जो इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की संतुष्टि करें, वही मूल्य है। यानि मूल्य इच्छा की संतुष्टि करते हैं।

पार्क के अनुसार, "वे वस्तुएँ मूल्यवान हैं जो इच्छित हैं"। (According to Park, "Thinks are valuable because, they are desired"). **स्टेनली के अनुसार,** "मूल्यों का निर्माण मनुष्य की रुचि द्वारा होता है, अतः मूल्यों के अंतर्गत मनुष्य द्वारा इच्छित वस्तु की परख अथवा मूल्यांकन भी आता है।"

2.2 मूल्य का महत्व (Importance of Value)

भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के लिए अलग–अलग मूल्य होते हैं, अतः मूल्यों के महत्व में अंतर किसी के लिए स्वयं के निर्धारित मूल्य के अनुसार होते हैं। किसी के लिए, एक मूल्य महत्वपूर्ण होता है तो दूसरे के लिए अन्य मूल्य महत्वपूर्ण होता है। कुछ लोग निरपेक्ष एवं शाश्वत मूल्य (Absolute and Eternal Value) को महत्व देते हैं, तो कुछ लोग सापेक्ष महत्व (Relative Importance) पर जोर देते हैं। जो लोग निरपेक्ष एवं शाश्वत मूल्य में विश्वास रखते हैं, उनके अनुसार कुछ कार्य स्वभावतया बुरे होते हैं, जबकि कुद कार्य परिस्थितिवश अच्छे अथवा बुरे हो सकते हैं। जैसे जरुरतमंदों की मदद करना सार्वभौमिक रुप से अच्छा कार्य है, जबकि हत्या या अनाचार सर्वथा निन्दनीय कार्य है। जबकि सापेक्षवादियों के मतानुसार, मूल्य स्थितियों में सापेक्षता में विश्वास करते हैं। इसको मानने वाले कुछ मूल्यों को अन्य मूल्यों की अपेक्षा अधिक महत्व देते हैं। संकट अथवा असमंजस की स्थिति में मूल्यों की प्राथमिकता के आधार पर समाधान की चेष्ट करते हैं।

2.3 मूल्य की प्रकृति (Nature of Value)

इन बातों से हमें मूल्य की प्रकृति का भान होता है। इसकी प्रकृति मुख्यतः तीन मत हैं:– (1) आत्मनिष्ठ मत (Subjective View), (2) वस्तुनिष्ठ मत (Objective View), (3) आपेक्षकीय

मत (Relativistic View)। मूल्य की इन्हीं प्रकृतियों के मध्य हम अपने मूल्यों का चुनाव करते हैं।

1. **आत्मनिष्ठ मत (Subjective View) :** मनुष्यों के व्यक्तिगत जीवन संतोष, पसंद वगैरह के आधार पर मूल्य निर्भर करते हैं । ये सभी व्यक्ति के अनुभवों से संबंधित होते हैं, जिनसे मूल्यों का विकास होता है ।

2. **वस्तुनिष्ठ मत (Objective View) :** मूल्य व्यक्ति से स्वतंत्र होते हैं अर्थात् वे व्यक्ति के भीतर नहीं होते हैं, ऐसे मूल्यों में वस्तुनिष्ठता होती है।3

3. **आपेक्षकीय मत (Relativistic View) :** नियामक तथा संरचनात्मक नियम के मिलन स्थल का मिलन बिन्दु है मूल्य। मनुष्य की किसी विशेष सभ्यता अथवा संस्कृति का प्रतिभागी होता है। उसका असर उसका मूल्य निर्धारण करता है जिसे अपेक्षकीय मत (Relativstic View) कहते हैं।

अब हम यह जानेगें कि मूल्य निर्धारण किन प्रक्रियाओं के तहत किया जात है।

3. मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया (Process of Determining Values)

मूल्य–निर्धारण की प्रक्रिया में **रथ, हर्मिन तथा साइमन (1966)** ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके लिए उन लोगों ने सात मानदण्डों को निर्धारित किया। ये सात मानदण्ड हैं:

1. **स्वतंत्र चयन (Choosing Freely):** व्यक्ति जब स्वयं मूल्यों का चुनाव करता है, तब उसपर खरा उतरने के लिए अधिक जागरूक रहता है, तथा लोगों की उपस्थिति अनुपस्थिति से उनके आचरण पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। अत:, व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करने वाले मूल्य व्यक्ति के स्वतंत्र चयन के परिणामस्वरुप स्थापित होना चाहिए।

2. **विकल्पों में से चयन (Choosing from Among Alternatives) :** इस तरह के मूल्य में जब व्यक्ति के सामने एक से अधिक विकल्प होते हैं तथा वह उनमें से किसी एक को चुनने के लिए स्वतंत्र होता है।

3. **विकल्पों के परिणामों के संबंध में विचारपूर्वक चयन (Choosing after thoughtful consideration of each alternative) :** किसी कार्य को करने अथवा न करने का निर्णय चयन की विवेकपूर्ण प्रक्रिया है। क्षणिक आवेग या बिना सोचे–समझे कार्य का परिणाम अक्सर गलत हुआ करता है। अत:, चयन के पूर्व व्यक्ति को प्रत्येक विकल्प के परिणामों को स्पष्ट रूप से समझने की कोशिश करनी चाहिए।

4. **महत्व देना (Prizing) :** जिन बातों को हम अपनी निजी जिंदगी में महत्व देते हैं। उसका अनुपालन करके हमें प्रसन्नता मिलती है, सुख प्राप्त होता है।

5. **दृढ़तापूर्वक स्वीकार करना (Affirming) :** हम जिन मूल्यों का चयन अपने आदर्शों के अनुसार करते हैं। तब आवश्यकता पड़ने पर दृढ़तापूर्वक पालन करते हैं।

6. **चयन की क्रियान्विति (Acting Upon Choice) :** मनुष्य न केवल हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं द्वारा महत्वपूर्ण मानी गयी बातों के बारे में अध्ययन करते हैं तथा उन पर समय, धन एवं शक्ति भी खर्च करते हैं। उन समूहों एवं संगठनों से जुड़ना अच्छा लगता है, जो हमारे मूल्य पोषित करते हैं।

7. **पुनरावृत्ति (Repeating) :** मूल्यों में स्थायित्व होता है। तब जीवन के अलग–अलग समय तथा परिस्थितियों में भी उनकी अभिव्यक्ति तथा पुनरावृत्ति होने लगती है।

4. मूल्य प्रणाली के रुप में संस्कृति एवं सभ्यता (Culture and Civilization in form of Value System)

प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए मूल्य प्रणाली (Value System) रखता है। यह जीवन के बढ़िया अथवा घटिया होने का प्रमाण निर्धारित करता है। प्रत्येक समाज में एक मूल्य–प्रणाली विकसित होती है, जिसमें उस समाज का सभ्यता एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ये मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, गन्तव्य,

मनोरथ एवं साध्य बनते हैं और वह जीवन को इनकी प्राप्ति के लिए लगा देता है। मूल्य ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, वफादारी, जिम्मेदारी, कर्त्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते हैं। मनुष्य अपने जीवन दृष्टिकोण को मूल्य के आधार पर आधारित करता है। यदि जीवन से प्रेम, सुंदरता, न्याय, सत्य, मित्रता वगैरह निकाल दें, तो यह एक निरर्थक कार्यचक्र बन जायगा। मूल्य ही मनुष्य के जीवन को अर्थ, आकर्षण, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।

जब मनुष्य किसी मूल्य को सीख लेता है, तब वह मूल्य संगठित रुप में मूल्य–प्रणाली में रुपांतरित हो जाता है। इस मूल्य प्रणाली में प्रत्येक मूल्य अन्य मूल्यों के संदर्भ में प्राथमिकता के क्रम में व्यवस्थित होते हैं। किसी व्यक्ति के परिवर्तित व्यवहार का कारण उसके मूल्य प्राथमिकता के क्रम में व्यस्थित होते हैं। किसी व्यक्ति के परिवर्तित व्यवहार का कारण उसके मूल्य प्राथमिकता के क्रम में परिवर्तन से होता है। इस तरह के मूल्य–प्रणाली में पर्याप्त स्थायित्व होता है। इससे किसी विशिष्ट समाज व संस्कृति में समाजीकृति अनोखे व्यक्तित्व की समानता एवं निरंतरता की जानाकरी होती है। वैयक्तिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक अनुभवों में भिन्नता के कारण भी मूल्य–प्रणाली में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। इन वैयक्तिक विभिन्नताओं के लिए व्यक्ति विशेष का साथ पूर्ण या अंश तादात्मीकरण, धार्मिक आस्था, लालन–पालन शैली, संस्थागत सांस्कृतिक मूल्यों का अभ्यंतरीकरण, बौद्धिक विकास, समाज

की मांग आदि उत्तरदायी है। सभी मनुष्यों के मूल्य–प्रणाली समान नहीं होते है और दो या दो अधिक मूल्यों में विरोध भी संभव है।

4.1 संस्कृति एवं सभ्यता की भूमिका (Role of Culture and Civilization)

भ्यता एवं संस्कृति सामाजिक मूल्यों ैवबपंस टंसनमद्ध का सबसे बड़ा स्रोत ैवनतबमद्ध है। वास्तव में, संस्कृति जीवन जीने का तरीका अथवा कला है। यह कला सदियों तक जमा होकर उक्त समाज में छाया रहता है। संस्कृति वह चीज है जो हमारे जीवन में व्यापत है तथा जिसकी विकास एवं रचना सदियों में होता है। संस्कृति शब्द से उन सभी मानवीय चेष्टाओं की अभिव्यक्ति की जाती है, जो धार्मिक, आध्यात्मिक, लौकिक, राजनीतिक गतिविधियों के कारण परम्परा का रूप धारण कर लेती है। संस्कृति के निर्माण में मूल परिस्थितियाँ, सामाजिक–व्यवस्था, नैसर्गिक नियम, प्राकृतिक प्रभाव आदि गुण सहायक होते हैं। इन गुणों कर्मों का मानवीय मन पर स्थायी प्रभाव पड़ता है, जिसे संस्कार भी कहते हैं। यही प्रभाव समुदाय विशेष के रहन–सहन, बोल–चाल, कला आदि में भी उत्कृष्ट रुप में दिखाई देता है। अलग–अलग सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के मूल्यों में भिन्नता मिलती है। उदाहरणार्थ, भारतीय समाज में हिन्दुओं के विवाह में एक विशिष्ट सामाजिक मूल्य, विवाह को पवित्र एवं धार्मिक बनाता है, जिसे इच्छानुसार तोड़ा नहीं जा सकता है। इस पवित्रता को बनाए रखने के लिए पति–पत्नी एक–दूसरे के वफादार रहते हैं। इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव के रुप में हिन्दुओं में विवाह–विच्छेद की भावना कम पनपती है तथा विधवा–विवाह को उचित नहीं माना जाता है क्योंकि विवाह स्त्री–पुरुष के बीच न मानकर दो आत्माओं का मिलन माना जाता है। वहीं अंग्रेजी संस्कृति में विवाह दो व्यक्तियों यानि स्त्री–पुरुष के बीच का निजि संबंध (Personal relation) हैं। यहाँ विवाह–विच्छेद (Divorce), पुनः विवाह (Re marriage), या विधवा–विवाह को निंदनीय नहीं माना जाता है। वही मुस्लिम समाज में एक से अधिक पत्नियों का रिवाज है, अतः हम देखते हैं कि सामाजिक मूल्य एवं मापदंड (Social Values and Standards) हमारे जीवन के अंतसंबंधों को परिभाषित करने में सहायक होते हैं। इस संबंध में अलग–अलग विचारकों ने अपने विचार कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं; **श्री मैक्स वेबर (Max Weber)** के अनुसार, "मूल्य–निर्णयों (Value Judgement) के इस

आधार पर वैज्ञानिक अध्ययन क्षेत्र से पृथक नहीं किया जा सकता है कि वे प्रतितिक (Subjective) हैं और उनका संबंध मानव की भावनाओं से है। ऐसी अनेक सामाजिक घटनाएँ हैं, जिनका बोध युक्तिसंगत (rational) या प्रत्यक्ष निरीक्षणत्मक (direct observational) पद्धति द्वारा सम्भव नहीं है। इन घटनाओं (Phenomenal) पद्धति द्वारा सम्भव नहीं है। इन घटनाओं (phenomenal) को समझने के लिए कर्त्ता के उद्देश्यों तथा उन उद्देश्यों में अंतनिर्हित मूल्यों के संबंध में जानकारी आवश्यक है। "दुर्खीम (Durkheim) ने सामाजिक मूल्य व आदर्शो पर अधिक जोर दिया। इसके अनुसार, "मूल्य की विवेचना एक सामाजिक तथ्य (Social fact) के रुप में ही करनी चाहिए। सामाजिक तथ्य, व्यवहार (विचार, अनुभव या क्रिया) का वह पक्ष

है, जिसका निरीक्षण वैषयिक रुप में सम्भव है और वह एक विशेष ढंग से व्यवहार करने को बाध्य करता है। **दूर्खीम** के अनुसार, सामाजिक तथ्य की भांति सामाजिक मूल्यों की दो प्रमुख विशेषताएँ होती हैं। (1) बाह्यता (exteriority) और (2) बाध्यता (constraint)। हालांकि मूल्य समाज के सदस्यो ंकी मानसिक अंतःक्रियाओं का फल है, परन्तु मूल्यों के अनुसार व्यक्ति का मस्तिष्क कार्य करता है। व्यक्ति की परिधि से स्वतंत्र सामाजिक मूल्य अपनी सत्ता रखते हैं। इस तरह सामाजिक मूल्यों में बाह्यता होती है। सामाजिक मूल्य व्यक्ति विशेष का न होकर, पूरे समाज का मूल्य होता है। अतः, यह व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित करता है और व्यक्ति को एक विशेष ढंग से व्यवहार करने के लिए बाध्य करता है। व्यवहार करने की बाध्यता ही सामाजिक मूल्य की बाध्यता है। इसी प्रकार, **जॉनसन (H.M. Johnson)** के अनुसार मूल्यों द्वारा सभी चीजों का मूल्यांकन किया जा सकता है, चाहे वे भावनाएँ हो या विचार, क्रिया, गुण, वस्तु, समूह, लक्ष्य या साधन हों। मूल्यों का आधार उद्वेगात्मक (emotional) होता है। मूल्य समाज के सदस्यों के उद्वेगों को अपील करता है तथा इसी आधार पर जीवित भी रहता है। व्यक्ति जब किसी विषय पर विचार करता है तो उस पर निर्णय लेने के लिए उसका मूल्यांकन करता है। उदाहरणस्वरुप, हिन्दुओं में विवाह संबंधी एक दृढ़ मूल्य अंतःविवाह

(endogamy) है। इस सामाजिक मूल्य के अनुसार व्यक्ति को अपनी ही जाति या उपजाति में विवाह करना चाहिए। जबकि अंतर्जातीय विवाह (intercaste marriage) चर्चा का विषय बनती है। (According to H.M. Johnson, value may be defined a conception or standard, cultural or merely personal, by which things are compared and approved or disapproved relative to one another held to be relatively desirable or undesirable, more meritorious, or less, more or less correct"). **जॉनसन** ने लिखा है कि मूल्य व्यक्तित्व को या सामाजिक अंतःक्रिया की व्यवस्था (System of Social Interaction) को संगठित करने में सहायक होता है। मूल्य कुछ सामान्य सामाजिक आदर्श, लक्ष्य या नीतियों को सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित करता है, जिसके फलस्वरूप सामाजिक संघर्ष की संभावनाएँ या सामाजिक जीवन की अनिश्चिताएँ कम हो जाती है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों या विभिन्न कार्यकलापों (activities) से संबंधित विभिन्न प्रकार के मूल्य होते हैं।

मानव–संस्कृति का विकास दीर्घकाल में और कई चरणों में हुआ है। चुँकि मानव–सभ्यता (civilization) का विकास अलग–अलग भौगोलिक स्थानों पर होने के कारण, उक्त स्थान की धरातलीय विषमता, जलवायकि कठोरता (रेगिस्तान, पर्वतीय, पठारीय आदि), यातायात के साधनों का अभाव आदि के कारण विभिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ। इसी के अंतर्गत भूमध्य सागर के समीप स्थित देशों में भी सभ्यता का तेजी से विकास होने लगा। इस प्रकार पश्चिमी एशिया तथा दक्षिणी यूरोप (यूनान तथा रोम) में महत्वपूर्ण सभ्यताएँ विकसित हुई। इनके अतिरिक्त विश्व के कुछ अन्य भागों तथा मध्य अमेरिका (माया सभ्यता), दक्षिणी अमेरिका

(इंका सभ्यता) अफ्रीका आदि प्रदेशों में भी मानव सभ्यताओं का विकास हुआ था। इन्हीं अलग–अलग सभ्यताओं में अलग–अलग संस्कृतियों का उद्‌भव हुआ। प्राचीन विश्व के प्रमुख सांस्कृतिक स्थल में, 1. मेसोपोटामिया संस्कृति, 2. सिंधु घाटी सभ्यता या संस्कृतिक स्थल, 3. ह्वांग हो घाटी सांस्कृतिक स्थल, 4. बनील घाटी संस्कृति, 5. ईजियन–यूनानी संस्कृति, एवं 6. अफ्रीकी सूडान संस्कृति। इनके अलावा नवीन विश्व में कुछ अन्य स्थलों पर भी नवीन संस्कृति ने जन्म दिया। जिसमें है– 1. मध्य अमेरिका (यात्रा) सांस्कृतिक स्थल तथा 2. पेरु–एण्डीज संस्कृति भी सम्मिलित है।

इस प्रकार, सभ्यता तथा संस्कृति का व्यक्ति के जीवन में, उसके मूल्यों के निर्धारण में अभूतपूर्ण योगदान है।

5. सारांश (Summary)

इस पाठ के माध्यम से हमने मूल्य–प्रणाली को विस्तार से जाना। मूल्य–प्रणाली के विकास में मूल्य की अवधारणा कैसे अपनी छाप छोड़ती है; अतः मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा जानना आवश्यक था, जिसकी वजह से इस पाठ में मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा की व्याख्या किया गया है। साथ ही मूल्य के महत्व को भी समझाया गया है। मूल्य के महत्व को समझने के लिए, इसकी प्रकृति को समझना आवश्यक था, अतः मूल्य की प्रकृति का भी संक्षिप्त वर्णन किया गया है। जबकि मूल्य की प्रकृति का विशद वर्णन अगले पाठ में किया जाएगा। इस पाठ के अंतर्गत मूल्य निर्माण में संस्कृति एवं सभ्यता के योगदान की विशुद व्याख्या की गई है। किस प्रकार अलग–अलग भौगोलिक भूभागों में अलग–अलग सभ्यताओं का विकास हुआ। इन सभ्यताओं के बीच कुछ बुनियादी भिन्नताएँ थी, सांस्कृति भिन्नताओं का सीधा प्रभाव व्यक्ति के मूल्य निर्धारण पर पड़ता है। तभी एक–ही परिस्थितियों में अलग–अलग व्यक्तियों की प्रतिक्रिया भिन्न होती है। इन सारी बातों की चर्चा इस पाठ में है। अतः आशा है कि यह पाठ छात्रों के लिए उपयोगी साबित होगी।

6. अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. मूल्य की अवधारणा क्या है? मूल्य का महत्व बताएँ?
   What is the concept of value? Explain the importance of value.
2. मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया को समझाएँ।
   Explain the process of determining value.
3. मूल्य–प्रणाली के रुप में सभ्यता एवं संस्कृति की भूमिका की व्याख्या करें।
   Explain the role of culture and civilization in the form of value system.
4. मूल्य–प्रणाली की विवेचना करें।
   Discuss the value-system.

❑❑❑